REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

गायकवाड कालीन श्रीमंत फतेहसिंहराव सार्वजनिक पुस्तकालय

डॉ. हरेश के. पंचाल
इतिहास विभाग, नवजीवन आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, दाहोद (गुजरात)

❊ सारांश :

पाटण तालुका का मुख्य स्थल और रेल्वे स्टेशन वाला मथक था। उस समय पाटण में २८३३९ इन्सानो की बस्ती थी। उसमें १३९०४ पुरुष और १४४३५ स्त्री थी। राज्य में पूराना ऐतिहासिक शहर पाटण था। वनराज चावडाने अणहिलवाड पाटण की स्थापना की थी। इ.स.७४२ से १३०४ तक चावडा, सोलंकी आदि हिंदु राजाओं का राज्य पूराना पाटण सरस्वती नदी के किनारे पर बसा था। पाटण में अलग-अलग जाति के लोग बसते थे। कोली, रबारी, कुंभार, लुहार, ब्राह्मण, मोढ आदि जाति के लोग बसते थे। कुछ वेपारी भी वेपार करते थे। पूरे भारत देश में पाटण के पटोले भी प्रख्यात है। उस समय की पाटण की प्रजा शिक्षित थी। उस समय के पाटण के शिक्षित लोगो द्वारा कुछ सेवाभाव प्रवृत्तियाँ होती थी। जैसे कि हाइस्कूलें बनवाना, बाग-बगीचे, दवाखाने बनवाना आदि। यह सब प्रवृत्तियाँ करने में आती थी और यह सब प्रवृत्तियाँ लोगो के द्वारा, लोगो के लिए आर लोगो के योगदान से होता था।

उस समय के पाटण के वांचनप्रिय लोगो द्वारा पाटण में पुस्तकालय शुरु किया था। पाटण के लोगो ने दिया हुआ अपना अमूल्य योगदान को जानीए।

पुस्तकालय ज्ञान की परब है। इस परब में ज्ञान की तरस छीपाने की सुविधा रही है। पुस्तकालय यानि लोकशिक्षण का एक अमूल्य साधन है। ऐसी मान्यता वाले वडोदरा राज्य के श्रीमंत महाराजा साहेबने प्रजाजनो की उन्नति, विकास और प्रगति के लिए फरजियात प्राथमिक केलवणी की योजना शुरु की। उसके बाद यह केलवणी द्वारा प्राप्त किये हुए ज्ञान में बढोतरी करने के हेतु से यह पुस्तक पढने और मनन करने पिपासुओ को मिलते रहे उसके लिए पुस्तकालय की प्रवृत्ति शुरु की और उसको प्रोत्साहन दिया।[१]

श्रीमंत फतेहरसिंहराव सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना इ.स.१८७९ में पाटण में एक खानगी मालिकी की संस्था के रुप में हुई थी। शुरु के समय में इस पुस्तकालय के उपयोग का लाभ सिफ सभासदो को ही मिलता था, लेकिन आहिस्ता आहिस्ता इस खानगी मालिकी की संस्था को इ.स.१८८२ में पाटण पुस्तकालय का नाम दिया और सार्वजनिक पुस्तकालय के रुप में समस्त प्रजाजन के लिए द्वार खोल दिये।

पाटण के कुछ वांचनप्रेमी लोगो के प्रयासो से वह सार्वजनिक पुस्तकालय में फिर गई। उस समय इ.स.१८८४ के समय में श्रीमंत महाराजा साहेब ने पाटण की मुलाकात ली और उसे समय पे उन्होने पुस्तकालय को रोकम रकम देकर और पुस्तकालय का स्वतंत्र मकान बनवाने के लिए जमीन भी दी थी।

उस अरसे में इ.स.१८८७ से ८९ में पाटण के दाता सदगृहस्थो ने उदार हाथो से दान दिया और अभी जो इमारत है वह इमारत इ.स.१८९७ में तीन दरवाजा बहार रु.२५०००/- के खर्चे पर बनवायी थी। उस इमारत का आज भी पाटण के वांचनप्रिय लोग उपयोग करते है।

इस इमारत का उदघाटन श्रीमंत संपतराय गायकवाड को हाथो से किया था और इस पुस्तकालय के साथ राजुकमार श्रीमंत फतेहसिंहराव महाराज का नाम जोड दिया। तबसे आज दिन तक यह पुस्तकालय 'श्रीमंत फतेहसिंहराव सार्वजनिक पुस्तकालय' के नाम से पहचाना जाता है।

उसके बाद इ.स.१८९१ से शुरु के तीन साल में मकान बनते बाकी देवा पूरा करने इस संस्था द्वारा १४ आजीवन सभ्य बनाकर जो रकम मीली उस रकममें से संस्था का बाकी देवा भरपाइ किया और इ.स.१८२३ में पुस्तकालय का कायम फड रु.७१० था। उस साल पाटण नगरपालिका द्वारा भी संस्था को रु.६६ ग्रान्ट दी गई। आहिस्ता आहिस्ता संस्था पगभर होती गई और पाटण के एक दाता द्वारा संस्था को एक खेतर भी बक्षीस के रुप में दिया गया। आहिस्ता आहिस्ता संस्था का विकास करने और आर्थिक संकडामण में से बहार निकलने के लिए आवक के नये साधन खडे करने के हेतु से संस्था की इमारत का उपरना हिस्सा मासिक रु.२० के किराये पे दिया गया और नीचे के मकान का आधा हिस्सा पाटण के वकीलो को बाररुम तथा साम के समय कलब तरीके उपयोग किया गया और उसमें से वार्षिक ३२५ किराये की आवक खडी करने में आयी।अ आहिस्ता आहिस्ता यह संस्था में कायमी फड में अच्छा बढावा होने लगा। उस समय इ.स.१९०६ से १९१३ के समय में नगरपालिका द्वारा ग्रान्ट में बढोतरी करने में आयी और वार्षिक रु.३०० ग्रान्ट देने की शुरु की। आवक में बढोतरी होने से पुस्तकालय में वर्तमानपत्रो और पुस्तको की छूट बरतने लगी।[२]

❊ पुस्तकालय के विकास का प्रथम दशका (इ.स.१८९१ से १९००) :

संस्था की स्थापना के शुरु के तीन सालो में उत्साह बहोत अच्छा रहा था और संस्था का मकान बनवाकर बाकी रहा कर्जा आजीवन सभासदो की आवक में से भरा था। उस

समय पुस्तकालय का कायमी फड रु.७६० तय किया और इ.स.१८९७ में फिर से उत्साह अमलदारो में और प्रजाजनो में से वकील मंडल मे जागृत हुआ है। पुस्तकालय का मेडल मासिक रु.२० के किराये से और पश्चिम दिशा तरफ की नीचे की कोठरी दिन को वडीलो के बेठने के लिए और शाम को कलब के तौर पर उपयोग करने के लिए किराये पर देने की व्यवस्था करने में आयी थी। उसके कारण रु.३२५ जितने किराये की आवक होती थी। उपरांत रु.५० खेतर की सांथ और रु.६० से ७० ब्याज और लवाजम की आवक थी । कभी कभी रु.११६ और ज्यादा से ज्यादा एक ही साल म रु.३१५१ जितनी आवक होती थी। इस सालो में पुस्तकालय को आजीवन सभासदो की अच्छी आवक मिली थी। इ.स.१८९९ में पुस्तकालय रु.५० की फो भरकर गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी में नोंध करायी थी और सरेराश कुल रु.८० के वर्तमानपत्रो और रु.५० के पुस्तको और रु.१५० नोकर के पगार के तौर पर हर साल पुस्तकालय खर्च कर रही थी।

✲ इ.स.१९०१ से १९१० तक पुस्तकालय का दूसरा तशका :

इस दशके के शुरु के वर्षो में लोगो के उत्साह में कम होता था। क्युं कि पेपर और पुस्तको का लाभ मात्र सभासद ले शकते थे जिससे सभासदों की सख्या बढे तो लवाजम बढे लेकिन उस समय सरेराश १५० से ज्यादा लवाजम की आवक होती नहीं थी। उसके बाद इ.स.१९०६ से नगरपालिका ने रु.३००० की मदद की लेकिन उसमें नगरपालिकाने शरत की कि सभासद के अलावा पाटण के लोगो को भी वर्तमानपत्र पढने की छूट दी जाय इस शरत से सभासदो की शरत में कटोती हुई और सभासदो की आवक कम होकर रु.७५ हो गई। उपरांत रु.५० सांघ का और रु.७० से ८० वर्तमानत्रो के लिए रु.१५० पगार और रु.४० से ५० पुस्तक खाते किये जाते। इ.स.१९०३ की आखिर में रु.२४६२ का पुस्तकालय कायमी फड था। उसे पोस्टल सेविंग बेंक में रखा जाता था। इस दशक के अंत में पुस्तकालय का कायमी फड रु.४६१ किया था।

✲ इ.स.१९११ से १९२० का तीसरा दशका :

इस दशके में श्रीमंत महाराज साहब ने फरजियात शिक्षण के परिणम स्वरुप गाँवो में वांचन की कमी से कम न हो जाय जो भी अक्षरज्ञान तीन-चार सालो में बचपन में इन्सान ने लिया हो उस वांचन द्वारा बढता रहे तो प्रजा में मानसिक तथा नैतिक बल बढता जाय इसके लिए पुस्तकालय और वांचनालय गाँव गाँव पुस्तकालय खाते की स्थापना करके प्रजा को बडे से बडा दान किया। यह पुस्तकालय सरकार तथा पंचायत की मदद स्वीकारने के लिए खाताने दो-एक साल समजूती दी तब आखिर इ.स.१९१४ में खाते की भलामण के हिसाब से पुस्तकालय को यानिकी उसमें के वर्तमानपत्रो और पुस्तको को जाहेर प्रजा के मफत उपयोग के लिए खुल्ला रखकर कस्बा पुस्तकालय के धोरण पर रु.३००-३०० की सरकार और पंचायत की मदद शुरु हो गई। उस समय पुस्तकालय के कुछ नवीन नियम बनाने में आये। नये नियम मुजब लवाजम भरे हुए सभासदो को घर पर वर्तमानपत्र तथा पुस्तक देने के हक दिये थे। उस समय में नगरपालिका और पंचायत रु.३०० ग्रान्ट देकर सभी पुस्तक जाहरे प्रजा के वांचन के लिए खरीदने इ.स.१९१५-१६ और इ.स.१९१६-१७ में रु.२०० की भी मदद श्रीमंत सरकार तरफ से दी गई। इस मुताबिक इस दशके में रु.२०० पंचायत के, रु.३०० सुधराइ के, रु.१५० किराये के, रु.३०० सांथ के, रु.५० ब्याज के, रु.२०० तथा लवाजम के रु.१५० मिलकर कुल रु.१२४५ वार्षिक सरेराश आवक मीली थी। आवक बढने से हर साल रु.२०० से २५० वर्तमानपत्रो के लिए, रु.३५० से ४०० नोकर के पगार के लिए, रु.३०० पुस्तको की खरीदी के लिए खर्च किये जाते थे। इस दशक के अंत तक पुस्तकालय में कायमी फड हर साल की बचत उमेर कर रु.६३३६ होता था।[३]

✲ इ.स.१९२०-२१ से इ.स.१९२८-२९ तक चोथा दशका :

इस पुस्तकालय को उस समय वार्षिक रु.१६०० से १९०० तक आवक होती थी। जिसमें लोक मदद के रु.१००० से १२०० का ही खर्च किया जाता था। पाटण शहर वडोदरा राज्य में दूसरे नंबर का २७००० की बस्ती वाला शहर था। पाटण में अलग-अलग जात की केलवणी होने से और लवाजम, ब्याज की पूरी रकम लोक मदद के तौर पर खर्च होने से इस पुस्तकालय को प्रान्त पुस्तकालय के धोरण पर मदद देने की आवश्यकता नामदार दिवान साहब, नायब दिवान साहब तथा प्रान्त सुबा ने खास स्वीकारी थी। इ.स.१९२७-२८ और इ.स.१९२८-२९ में एक खास इन्सान अेलावन्स पे रखकर शहर की स्त्रीओ को घर बेठ कर पुस्तक पहोंचाने की योजना शुरु की जाती थी। बच्चो के लिए के पुस्तक भी मंगाये थे। इस दशके में प्रजा में वर्तमानत्र पढने का शोध बढा और उसमें कुछ सदगृहस्थो तथा अमलदार वर्तमानत्रो तथा पुस्तको एक से ज्यादा संख्या में घर पर पढने मिल रहे उसके लिए लवाजम भरकर सभासद बनते थे। उस दशके में लोगो का उत्साह बढता था।

इस के बाद के सालो में संस्था के पुस्तको का वर्गीकरण करके पुस्तकालय के पुस्तको का रजीस्टर बनाया गया था।

इ.स.१९४३-४४ में संस्था के खेतर की जमीन रु.२८१०० में बेच दी गई और पाटण नगरपालिका डीबेन्चर्स और बरोडा बेंक के शेरो में रोकाण करके ब्याज की आवक बढाने में आयी। इ.स.१९४६-४७ में नेशनल सेविंग्स सर्टीफोकेट भी रकाण करने में आता था।[४]

इ.स.१९५३-५४ में यह पुस्तकालय शिष्ट वांचन का परीक्षा केन्द्र बना था। इस तरीके से संस्था ने धीरे धीरे प्रगति के पंथ पर ७५ साल इ.स.१९६५ में पूरे किये। उस समय संस्था का 'अमृत महोत्सव' योजने में अये।

✲ संदर्भ सूचि :

१. संपादक मणिभाइ प्रजापति और महेन्द्र पी. खमार, ''पाटण की श्री और संस्कृति, श्रीमंत फतेहसिंराव सार्वजनिक पुस्तकालय'', पृ.१०, ११
२. चौधरी कृपा वी., ''अर्वाचीन पाटण के घडवैये'', अप्रगट अेम.फिल. लघुशोध निबंध, हेम. उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी, इ.स.२००८-०९, पृ.७६

३. पूर्वोक्त, ''पाटण की श्री और संस्कृति'', पृ.१८, १९
४. अेजन, पृ.२०, २१

डॉ. हरेश के. पंचाल
इतिहास विभाग, नवजीवन आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, दाहोद (गुजरात)